

मुकदमों का विवरण

न्यू इंडिया आश्वासन कंपनी। लिमिटेड. और ओ. आर. एस. बनाम.

मेसर्स मुदित रोडवेज (2023 की सिविल अपील संख्या 339) 24 नवंबर, 2023

[ऋषिकेश रॉय और संजय करोल, जे. जे.] हेडनोट्स

विचार के लिए विषय: क्या राष्ट्रीय आयोग को बीमा कंपनी के खिलाफ बीमित व्यक्ति के बीमा दावे की अनुमति देने में न्यायसंगत ठहराया गया था।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, **1986**-अग्नि बीमा दावा-अस्वीकार-एक बीमित गोदाम में आग लग गई-बीमित व्यक्ति ने शुल्क के खिलाफ कवरेज के लिए भुगतान किया है और कस्टम बंधुआ वस्तुओं की सुरक्षा की है-सर्वेक्षण और जांच रिपोर्ट-अधिकांश कारण के रूप में बिजली के शॉर्ट सर्किट का सुझाव देते हैं और दो रिपोर्ट छत पर वेल्डिंग के काम से चिंगारी का सुझाव देते हैं-बीमा कंपनी द्वारा दावे का खंडन-बीमित व्यक्ति द्वारा उपभोक्ता शिकायत-राष्ट्रीय आयोग द्वारा यह मानते हुए अनुमति दी गई है कि बीमा पॉलिसी शिकायतकर्ता के गोदाम को कवर करती है और छत पर काम करने से जोखिम में वृद्धि नहीं होती है और ब्याज के साथ निर्दिष्ट संपादित राशि का भुगतान करने का निर्देश दिया जाता है-शुद्धता:

आयोजित किया गया: बीमित व्यक्ति के प्रति बीमा कंपनी का दायित्व बहुत अधिक महत्वपूर्ण है-चाहे वह शॉर्ट-सर्किट हो या कोई अन्य कारण हो, फिर भी इसका कोई महत्व नहीं है, बशर्ते कि दावेदार बीमाकर्ता के खिलाफ बीमित व्यक्ति के दावे को बरकरार रखा जाए-बीमाकर्ता अपने पत्र में दिए गए विवरण से परे अतिरिक्त तर्क पेश नहीं कर सकता है, ताकि अस्वीकृति को सही ठहराया जा सके-वह क्षेत्र जहां बीमित व्यक्ति के बारे में जानकारी दी गई थी, वह उक्त बीमा पॉलिसी के दायरे में था-विभिन्न दस्तावेजों को देखते हुए, यह निष्कर्ष निकालना उचित है कि बीमित व्यक्ति के परिसर की पहचान बीमा कंपनी द्वारा की गई थी और गोदाम में पानी के रिसाव को रोकने के लिए छत पर मरम्मत कार्य किया गया था।

1027

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 13 एस सी आर।

वेयरहाउस परिसर-वेल्डिंग कार्य और फिअर के बीच मौजूद समय अंतराल का कोई तार्किक स्पष्टीकरण नहीं है-तदनुसार अस्वीकृति का आधार अनुचित प्रतीत होता है और स्वीकार्य नहीं है-सर्वेक्षक की रिपोर्ट, हालांकि अन्यथा व्यापक है, फिअर के वास्तविक कारण की पहचान करने वाले पहलू पर अनिर्णायक है-यह देखते हुए कि सर्वेक्षक की रिपोर्ट केवल फोरेंसिक परीक्षक फिअर पर निर्भर करती है, उक्त रिपोर्ट पर भरोसा करना असुरक्षित होगा-इसके अलावा, दावेदार न तो

आयातक की भूमिका निभाता है और न ही मालिक की; इसके बजाय, वे पूरी तरह से अपने ग्राहकों की ओर से माल के साथ सौंपे गए संरक्षक के रूप में कार्य करते हैं-दावे के सीमा शुल्क घटक को, दी गई घटना में, सीधे सीमा शुल्क को जारी किया जाना चाहिए।[पारस 33,35,37,41,47,50,55,56,58]

बीमा-बीमा अनुबंध-उबेरिम का सिद्धांत:

आयोजित किया गया:विश्वास आधारशिला के रूप में कार्य करता है, बीमाकर्ता-बीमित संबंध का सार बनाता है-मौलिक सिद्धांत यह है कि बीमा उबेरिमा फाई देई के सिद्धांत द्वारा नियंत्रित होता है-बीमित व्यक्ति की ओर से पूर्ण सद्भावना होनी चाहिए-बीमा अनुबंध का दिल और आत्मा उस सुरक्षा में निहित है जो वह उन लोगों को प्रदान करता है जो इसके द्वारा बीमित होना चाहते हैं-यह समझ इस मूलभूत विश्वास को समाहित करती है कि बीमा सुरक्षा और क्षतिपूर्ति प्रदान करता है, अपने खंडों के भीतर विश्वास की पवित्रता को बनाए रखता है-प्रभावी रूप से, बीमाकर्ता सद्भावना से कार्य करने और अपनी प्रतिबद्धता का सम्मान करने के लिए एक वित्तीय कर्तव्य मानता है-यह जिम्मेदारी विशेष रूप से तब स्पष्ट हो जाती है जब बीमित व्यक्ति अपने कार्यों में, अपने कार्यों में, सुरक्षा प्रदान नहीं करता है।[पैरा 57]

बीमा अधिनियम, 1938 -धारा 64 (यू. एम.) (4)-सर्वेक्षणकर्ता की रिपोर्ट का मूल्य:

आयोजित किया गया:दावे के लिए एक अनुमोदित सर्वेक्षणकर्ता का मूल्यांकन आवश्यक है -एस. 64 (यू. एम.) (4) आदेश देता है कि रुपये से अधिक का दावा करता है। 20, 000 का मूल्यांकन शुरू में एक अनुमोदित सर्वेक्षणकर्ता द्वारा किया जाना चाहिए-बीमाकर्ता के पास सर्वेक्षणकर्ता द्वारा मूल्यांकन की गई राशि की तुलना में अलग-अलग राशि के दावे का निपटान करने का विवेकाधिकार है-सर्वेक्षणकर्ता की रिपोर्ट को एक पवित्र दस्तावेज नहीं माना जा सकता है और एक जांच रिपोर्ट सहित विपरीत साक्ष्य, खंडन के अधीन है।[पैरा 42,43,45] 1029

न्यू इंडिया आश्वासन कंपनी। लिमिटेड. और ओ. आर. एस. बनाम.मेसर्स मुडिट रोड 1030

शहरों और
अन्य संदर्भों
की सूची

न्यू इंडिया एस्योरेंस कंपनी लिमिटेड बनामप्रदीप कुमार (2009) 7 एससीसी 787:[2009] 16 एस. सी. आर. 508; गलाडा पावर एंड टेलीकम्युनिकेशन लिमिटेड बनामयूनाइटेड इंडिया इश्योरेंस कंपनी लिमिटेड (2016) 15 एस. सी. सी. 161; केनरा बैंक बनाम यूनाइटेड

भारत बीमा कंपनी; (2020) 3 एस. सी. सी. 455:[2020] 7 एससीआर 498; खतेमा

फाइबर्स लिमिटेड बनामन्यू इंडिया एस्योरेंस कंपनी लिमिटेड और ए. एन. आर. 2021 एस. सी. सी. ऑनलाइन एस. सी. 818; सौराष्ट्र केमिकल्स लिमिटेड बनाम.राष्ट्रीय बीमा कंपनी

लिमिटेड (2019) 19 एस. सी. सी. 70; जे. एस. के. इंडस्ट्रीज प्रा. लिमिटेड बनाम।
ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड 2022 एससीसी

ऑनलाइन 1451-संदर्भित।

बीमा कानून पर मैकगिलिब्रे-12 वीं संस्करण, जॉन बर्ड्स, स्वीट एंड

मैक्सवेल (2012)-संदर्भित।

अन्य मामलों के विवरणों में आयातित आदेश और आवेदन शामिल हैं

सिविल अपील न्यायनिर्णय:2023 की सिविल अपील No.339।2020 के सीसी No.765 में
राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग, नई दिल्ली के दिनांक 10.08.2022 के निर्णय और आदेश
से।

रूप:

आदित्य कुमार, सी. जॉर्ज थॉमस, सुश्री प्राची पांडे, अधिवक्ता।अपीलार्थियों के लिए।

पार्थिव के. गोस्वामी, मृणाल कुमार चौधरी, वरिष्ठ अधिवक्ता।, देवेश त्रिपाठी, सुश्री अनसूया चौधरी,
फराज अनीस, मुकेश्वर नाथ दुबे, अभिषेक यादव, सुश्री ऋचा पांडे, आलोक त्रिपाठी, रवि कुमार,
रजतदीप शर्मा, प्रवीण स्वरूप, अधिवक्ता।उत्तरदाता के लिए।

सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय का निर्णय/आदेश

ऋषिकेश रॉय, जे।

1. अपीलार्थियों की ओर से पेश विद्वान वकील श्री आदित्य कुमार को सुना।श्री पार्थिव के. गोस्वामी
और प्रत्यर्थी के विद्वान वरिष्ठ वकील श्री मृणाल कुमार चौधरी को भी सुना।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 13 एस सी आर।

2. यह अपील राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (इसके बाद संक्षेप में 'एन. सी. डी. आर. सी.'
के रूप में संदर्भित) के आदेश को चुनौती देती है, जिसने उपभोक्ता शिकायत को आंशिक रूप से
बीमा कंपनी को 8 सप्ताह के भीतर दावा अस्वीकार करने की तारीख से 9 प्रतिशत ब्याज के साथ
बीमा दावे के लिए रुपये, 155/- का भुगतान करने का निर्देश दिया, या निर्धारित 8 सप्ताह से अधिक
12 प्रतिशत ब्याज का सामना करना पड़ा।

बीमा नीतियाँ और दावा प्रक्रियाएँ

3. प्रत्यर्थी ने निम्नलिखित बीमा पॉलिसियाँ खरीदीं:

श्री. नहीं।	वर्णन	भुगतान की तारीख	पॉलिसी की अवधि	बीमित राशि
1	मानक अग्नि और विशेष जोखिम नीति 170800111701 00000734	19.06.2017	19.06.2017 18.06.2018 तक	रु. 6 करोड़
2	सीमा शुल्क पैकेज नीति 111400461724 80000017	30.09.2017	30.09.2017 29.09.2018 तक	रु. 20 करोड़
3	मानक अग्नि और विशेष खतरे नीति 111400111701 00001014	30.11.2017	30.11.2017 29.11.2018 तक	रु. 150 करोड़
4	सीमा शुल्क पैकेज नीति को अतिरिक्त समर्थन	29.12.2020	-	रु. 75 करोड़

4. इन बीमा पॉलिसियों में 106750 वर्ग किलोमीटर के परिसर शामिल थे। फुट (आच्छादित क्षेत्र) और 15000 वर्ग मीटर। सर्वेक्षण संख्या 09, हिंसा संख्या 03, गाँव-वेक्षी, तालुका-उरण, जिला-रायगढ़, महाराष्ट्र में फुट (खुला क्षेत्र)। दावेदार ने भंडारण उद्देश्य के लिए मेसर्स प्लेटिनम लॉजिस्टिक्स से परिसर को पट्टे पर दिया। दावेदार ने कस्टम बंधुआ वस्तुओं की सुरक्षा के लिए और शुल्क आदि के खिलाफ जोखिम को कवर करने के लिए न्यू इंडिया एस्योरेंस को Rs.44,02,562/- का भुगतान किया।

5. बीमा पॉलिसियों के लंबित रहने के दौरान, 14.03.2018 पर, बीमित गोदाम में एक मामला सामने आया। इसके बाद प्रतिवादी ने बीमा कंपनी और सीमा शुल्क अधिकारियों को इसके बारे में सूचित किया। बीमा कंपनी ने नुकसान का आकलन करने के लिए मेसर्स जे. सी. भंसाली एंड कंपनी को सर्वेक्षक के रूप में नियुक्त किया। 03.10.2018 पर, बीमित व्यक्ति ने रुपये की राशि का दावा किया। 6,57,55,155/-। कुल दावे में से रु। 5,54,17,891/- नीति सं. 17080011170100000734 के खिलाफ था; Rs.18,73,984/- पॉलिसी No.11140011170100001014 के तहत और रु। नीति No.11140046172480000017 के तहत क्रमशः 2,15,18,802/-।

1031

न्यू इंडिया आश्वासन कंपनी। लिमिटेड. और ओ. आर. एस. बनाम.

आग पर रिपोर्ट **14.03.2018**

6. घटना के दिन, मामले की सूचना पुलिस को भी दी गई थी, जिसके परिणामस्वरूप 15.03.2018 पर प्राथमिकी संख्या 03/2018 दर्ज की गई थी। पुलिस जाँच ने प्रथम दृष्टया बिजली के शॉर्ट सर्किट को कारण के रूप में निष्कर्ष निकाला, जिसे बीमा सर्वेक्षक को बताया गया था।

7. महाराष्ट्र सरकार के उद्योग ऊर्जा और श्रम विभाग के निरीक्षण प्रभाग द्वारा संबोधित एक अन्य रिपोर्ट (दिनांक 23.04.2018) में दर्ज किया गया है कि गोदाम के एक हिस्से में बिजली की चिंगारी के कारण दुर्घटना हुई क्योंकि उस क्षेत्र में बिजली की व्यवस्था थी और डिब्बों, कागजों और रसायनों जैसी ज्वलनशील सामग्री का भंडारण किया गया था।

8. ऑन-साइट एफ. आई. रिफाइटर्स द्वारा की गई जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट की जांच ने अपनी रिपोर्ट (09.05.2018) में खुलासा किया कि संभावित कारण बिजली का शॉर्ट सर्किट था।

9. दावेदार के ग्राहकों द्वारा नियुक्त स्वतंत्र सर्वेक्षणकर्ताओं द्वारा तैयार की गई दो अतिरिक्त रिपोर्ट (07.08.2018 और 31.08.2018) प्रस्तुत की गईं। दोनों रिपोर्टों ने संकेत दिया कि आगजनी का संभावित कारण शॉर्ट सर्किट था। 10. मेसर्स स्क्रीन फैक्ट्स सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, बीमा कंपनी द्वारा नियुक्त फॉरेंसिक परीक्षक, ने फिर से काम करने वाले गोदाम के हिस्से का निरीक्षण किया और अपनी रिपोर्ट (10.12.2018) में कहा कि ज्वलनशील सामग्री को वहां संग्रहीत किया गया था जहां यह हुआ था, लेकिन विद्युत तारों की अनुपस्थिति के कारण शॉर्ट सर्किट को कारण के रूप में खारिज कर दिया। फॉरेंसिक परीक्षक ने इस बात पर प्रकाश डाला कि छत पर वेल्डिंग का काम 16 तक किया गया: 04 घंटे। घटना के दिन, एक संभावित कारण था। इसने दर्ज किया कि सुरक्षित गोदाम में वेल्डिंग के काम के दौरान लापरवाही के कारण चिंगारी और सूजन वाली सामग्री के कारण आग लगी। 11. अपीलार्थियों द्वारा नियुक्त अन्वेषक, एम/एस. जे. बशीर एंड एसोसिएट्स ने अपनी आई. डी. 1 रिपोर्ट में निष्कर्ष निकाला कि एफ. आई. आर. विद्युत शॉर्ट सर्किट के कारण था, जो फॉरेंसिक परीक्षक के निर्णयों का खंडन करता है। उन्होंने यह भी नोट किया कि बीमा पॉलिसी में सर्वेक्षण संख्या 9/3 के गोदाम को शामिल नहीं किया गया था क्योंकि यह शुल्क द्वारा अधिग्रहित नहीं था।

12. बीमा कंपनी के सर्वेक्षक मेसर्स जे. सी. भंसाली एंड कंपनी ने अपनी रिपोर्ट (15.04.2019) में निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला:-

“1. आग लगने का कारण निर्माण कार्य के दौरान पर्याप्त सावधानी न बरतने में प्रबंधन की ओर से लापरवाही है।

मेसर्स मुदित रोडवेज [हृषिकेश रॉय, जे.] 1032 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [2023] 13 एस. सी. आर.

2. लगभग 18000 से 20000 वर्ग कि. मी. बंधे हुए गोदाम की छत का क्षेत्र, जो कस्टम बंधे हुए गोदाम है, का खुलासा किया गया था, यानी, नुकसान के समय कोई छत की चादरें नहीं थीं, जिसके कारण बीमित या बीमित संपत्ति वाली इमारत को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों को इस तरह से बदल दिया गया था, जिससे बीमित खतरों से नुकसान या क्षति का खतरा बढ़ गया था और;

3. एफ. आई. एफ. ई. टी. ई. टी. वेयरहाउस के सर्वेक्षण संख्या को नीति के तहत घोषित/कवर नहीं किया गया है।

4. पॉलिसी सर्वेक्षण संख्या 9/3 पर स्थान को शामिल करती है, लेकिन बीमित व्यक्ति का कार्यालय और सर्वेक्षणकर्ता संख्या 9/3 पर स्थित एक गोदाम को पुनर्स्थापित नहीं किया गया था और वे सुरक्षित थे;

5. इसलिए, संदर्भ के तहत दावा प्रासंगिक नीति के दायरे से बाहर है और दावे के तहत देयता उत्पन्न नहीं होती है।”

13. सर्वेक्षण और जांच रिपोर्ट प्राप्त करने के बाद, बीमा कंपनी ने अपने 15.07.2019 संचार के साथ, प्रतिवादी के दावे को खारिज कर दिया। उनके बाद के संचार (14.12.2019) में, निम्नलिखित दो कारण बताए गए थे: 1) सर्वेक्षण सं. 9/3 में बीमित परिसर को एफ. आई. आर. द्वारा निष्क्रिय कर दिया गया था, और 2) खतरनाक रसायनों के साथ एक सुरक्षित सीमा शुल्क-बद्ध गोदाम में छत के निर्माण के दौरान बीमित व्यक्ति की लापरवाही के कारण एफ. आई. आर. गोदाम में निर्माण कार्य ने जोखिम को बढ़ा दिया, जिससे पॉलिसी के नियमों और शर्तों के खंड 3 के तहत बीमा कवरेज बंद हो गया। बीमा कंपनी द्वारा जारी किए गए अस्वीकृति पत्रों का विवरण निम्नलिखित है:

क्र. नं.	तिथि	अस्वीकृति का पत्र
1	28.06.19	पॉलिसी सं. के संबंध में दावे को अस्वीकार करते हुए बीमा कंपनी का पत्र। 111404617248 0000017 (सीमा शुल्क पैकेज नीति)
2	15.07.19	बीमा कंपनी का बीमा पॉलिसी के संबंध में दावे को अस्वीकार करने वाला पत्र सं। 170800111701 00000734 (मानक अग्नि और विशेष जोखिम नीति-न्यास में रखे गए सामान)
3	14.12.19	बीमा कंपनी का बीमा पॉलिसी के संबंध में दावे को अस्वीकार करने वाला पत्र सं। 170800111701 00000734

न्यू इंडिया आश्वासन कंपनी। लिमिटेड. और ओ. आर. एस. बनाम.

उपभोक्ता शिकायत

14. दावे के उपरोक्त खंडन से असंतुष्ट प्रतिवादी ने न्यू इंडिया एस्योरेंस कंपनी द्वारा सेवा अवज्ञा और अनुचित व्यापार प्रथाओं का हवाला देते हुए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 के तहत 2020 की शिकायत संख्या 765 का नेतृत्व किया। लि. अपने जवाब में, बीमा कंपनी ने मेसर्स जे. बशीर एंड एसोसिएट्स की जांच रिपोर्ट (11.04.2019) और मेसर्स जे. सी. भंसाली एंड कंपनी की अंतिम सर्वेक्षण रिपोर्ट (15.04.2019) का उल्लेख किया। उन्होंने तर्क दिया कि पर्याप्त सावधानियों के बिना बीमित व्यक्ति द्वारा किए गए छत वेल्डिंग कार्य के दौरान यह घटना हुई। यह भी कहा गया था कि सर्वेक्षण संख्या 9/3 में बीमित गोदाम को शुल्क द्वारा प्रभावित नहीं किया गया था। इसके अलावा, गोदाम में छत के काम ने जोखिम को बढ़ा दिया, बीमा पॉलिसी की सामान्य शर्त 3 का उल्लंघन करते हुए, अस्वीकृति को उचित ठहराया।

15. विवादित आदेश में, एन. सी. डी. आर. सी. ने अपने निर्णय पर पहुंचने के लिए दो महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार किया:

(i) क्या सर्वेक्षण संख्या 9 हिस्सा 3 (9/3) ग्राम वेश्वी, ताल-उरान, जिला-रायगढ़ में स्थित शिकायतकर्ता के गोदाम का बीमा विरोधी पक्ष द्वारा किया गया था;

(ii) 14.03.2018 पर हुई दूसरी घटना का कारण क्या था? 16. एन. सी. डी. आर. सी. ने शिकायतकर्ता के पक्ष में यह निष्कर्ष निकालते हुए फैसला सुनाया कि बीमा पॉलिसी शिकायतकर्ता के गोदाम को कवर करती है। दूसरे मुद्दे पर, एन. सी. डी. आर. सी. ने वेल्डिंग कार्य और घटना के बीच के समय अंतराल को नोट किया और देखा कि फोरेंसिक रिपोर्ट अनिर्णायक है। एफ. आई. आर. ई. के कारण के रूप में एक विद्युत शॉर्ट सर्किट का सुझाव देने वाली अन्य रिपोर्ट अधिक स्वीकार्य पाई गई।

17. बीमित व्यक्ति द्वारा किए गए छत के काम की ओर इशारा करते हुए, एन. सी. डी. आर. सी. ने माना कि इससे जोखिम में वृद्धि नहीं होती है, और इसलिए खंड संख्या 3 लागू नहीं था। न्यू इंडिया एस्योरेंस कंपनी लिमिटेड बनाम न्यू इंडिया एस्योरेंस कंपनी लिमिटेड में अनुपात का उल्लेख करते हुए। प्रदीप कुमार 1; एन. सी. डी. आर. सी. ने इस बात पर प्रकाश डाला कि अनुमोदित सर्वेक्षणकर्ता की रिपोर्ट, हालांकि महत्वपूर्ण है, निरपेक्ष नहीं है और पक्षों के लिए बाध्यकारी नहीं है। एन. सी. डी. आर. सी. ने तदनुसार बीमा कंपनी की सेवा में बीमित व्यक्ति की अवज्ञा के पक्ष में फैसला सुनाया। इस प्रकार, ब्याज के साथ निर्दिष्ट राशि के भुगतान के लिए निर्देश जारी किया गया था।

मेसर्स मुदित रोडवेज [हृषिकेश रॉय, जे.] 1034 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट [2023] 13 एस. सी. आर. दलीलें

18. अपीलार्थियों के वकील श्री आदित्य कुमार ने तर्क दिया कि इस मामले का कारण बीमाकृत की ओर से लापरवाही थी। फोरेंसिक अन्वेषक (मेसर्स स्क्रीन फैक्ट्स सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड) दिनांक 10.12.2018 (अनुलग्नक ए-10) की रिपोर्टों पर भरोसा किया गया, जिसमें पाया गया कि विद्युत शॉर्ट-सर्किट घटना का कारण नहीं था। इसके बजाय, वेल्डिंग के दौरान आस-पास के क्षेत्र में संग्रहीत एफ. एल. एम्मेबल रसायनों पर गिरने वाली चिंगारी के कारण आग लग सकती थी। सर्वेक्षणकर्ता की रिपोर्ट (मेसर्स भंसाली एंड कंपनी) दिनांक 15.04.2019 (अनुलग्नक ए-12) पर आगे यह सुझाव देने के लिए भरोसा किया गया था कि यह मामला छत की मरम्मत के काम के दौरान पर्याप्त सावधानी न बरतने में बीमित व्यक्ति की ओर से लापरवाही के कारण हुआ था। बिना किसी सावधानी के इस तरह के मरम्मत कार्य करने से बीमित संपत्ति में इस तरह से बदलाव किया गया जिससे नुकसान या क्षति का खतरा बढ़ गया। इसके अतिरिक्त, निर्माण या मरम्मत कार्य के दौरान खतरनाक रसायनों का भंडारण करना अपने आप में एक लापरवाही भरा कार्य था और यह नीतिगत शर्तों का उल्लंघन था।

19. विद्वान वकील बताते हैं कि फोरेंसिक निरीक्षक और सर्वेक्षणकर्ताओं को विशेष रूप से इस घटना की जांच करने का काम सौंपा गया था। चूंकि आगजनी के कारण के रूप में शॉर्ट-सर्किट को खारिज कर दिया गया था, श्री कुमार का तर्क है कि बीमित व्यक्ति की ओर से लापरवाही के सिद्धांत (संग्रहीत दहनशील सामग्री के आसपास छत निर्माण कार्य करने में) को स्वीकार किया जाना चाहिए। 20. अपीलार्थियों के लिए, श्री कुमार ने सर्वेक्षणकर्ता की रिपोर्ट (मेसर्स बशीर एंड एसोसिएट्स) दिनांक 11.04.2019 (अनुलग्नक ए-11) भी पढ़ी, जिसमें निष्कर्ष निकाला गया कि बीमा पॉलिसी में पुनर्निर्धारित गोदाम के परिसर को शामिल नहीं किया गया था। और इस तरह, अस्वीकृति को उचित ठहराया जाता है क्योंकि बीमा कवरेज बीमित व्यक्ति के कार्यालय और गोदाम तक सीमित था जिसमें कोई जलने की घटना नहीं थी।

21. तब से रु। 2,15,18,802.45-सीमा शुल्क देयता के लिए दावा किया गया था, अपीलकर्ताओं का तर्क है कि बीमित गोदाम को मुआवजा देना गलत है क्योंकि सीमा शुल्क देयता केवल सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 की धारा 12 और 46 के तहत आयातक पर निर्भर करती है। वकील सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 की धारा 23 पर यह तर्क देने के लिए निर्भर करता है कि गोदाम में संग्रहीत नष्ट आयातित वस्तुओं के लिए मुआवजा देना अन्यायपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, यह भी तर्क दिया जाता है कि सीमा शुल्क विभाग के मांग पत्र में वैधानिक आधार का अभाव है। इसलिए यह प्रस्तुत किया जाता है कि बीमित व्यक्ति 1035 की मांग नहीं कर सकता है।

न्यू इंडिया आश्वासन कंपनी। लिमिटेड. और ओ. आर. एस. बनाम. मेसर्स मुदित रोडवेज [हृषिकेश रॉय, जे.] 1036

इस तरह के किसी भी मुआवजे के रूप में नुकसान के लिए क्षतिपूर्ति अन्यायपूर्ण संवर्धन के बराबर होगी।

22. विद्वान वकील प्रस्तुत करता है कि छूट का सिद्धांत लागू होता है

गलाडा पावर एंड टेलीकम्युनिकेशन लिमिटेड बनामयूनाइटेड इंडिया बीमा

कं. लिमिटेड 2 को खारिज कर दिया गया था। इसके अलावा, कार्यवाही के किसी भी चरण में कानूनी प्रस्तुति का आग्रह किया जा सकता है। इसलिए, अन्यायपूर्ण संवर्धन और सीमा शुल्क के आधारों पर अभी भी अदालत के समक्ष तर्क दिया जा सकता है, हालांकि उन पर पहले तर्क नहीं दिया गया था।

23. इसके विपरीत, दावेदार की ओर से उपस्थित विद्वान वरिष्ठ वकील श्री पार्थिव के. गोस्वामी का तर्क है कि बीमा कंपनी को अस्वीकृति पत्र में उल्लिखित अतिरिक्त आधारों का आग्रह करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। इसलिए अपीलकर्ताओं को अपनी दलीलें अस्वीकार पत्र में उल्लिखित आधारों तक सीमित रखनी चाहिए।

24. विद्वान वकील तब प्रस्तुत करता है कि दिनांक 04.07.2015 के अवकाश और लाइसेंस समझौते से यह स्पष्ट है कि मैसर्स प्लेटिनम लॉजिस्टिक्स ने दावेदार को गाँव-वेश्वी, तालुका-उरण, रायगढ़ में सर्वेक्षण No.9/3 पर स्थित भूमि पट्टे पर दी थी। इसके अलावा, उसी भूमि पर एक बंधुआ गोदाम के लिए सीमा शुल्क विभाग से मंजूरी मांगी गई और प्राप्त की गई। बीमा पॉलिसी में बीमित परिसर के स्थान का उल्लेख मुदित रोडवेज, सर्वेक्षण No.9/3 सी. पी. पी. फोर्ब्स सी. एफ. एस., चिरनेर रोड, गाँव-वेश्वी, उरण, एम. एच. 1369, महाराष्ट्र-400702 के रूप में किया गया है। दावे को सही ठहराने के लिए, श्री गोस्वामी ने तहसीलदार, उरण, रायगढ़ से दिनांकित 25.03.2018 (अनुलग्नक R-18) और 23.03.2018 (अनुलग्नक R-20) के दो संचारों को पढ़ा और टेलीफोन कनेक्शन (अनुलग्नक R-16), बिजली कनेक्शन (अनुलग्नक R-17) और कार्यकारी मजिस्ट्रेट (अनुलग्नक R-10) के अन्य संचारों पर भी भरोसा किया ताकि यह इंगित किया जा सके कि पहली घटना बीमित गोदाम के एक ही पते पर हुई थी। इसके अलावा, जिन ग्राहकों ने अपने स्वयं के स्वतंत्र सर्वेक्षणकर्ता नियुक्त किए (मेसर्स कन्नन एंड मेसर्स प्रोक्लेम) ने नोट किया कि जिस गोदाम में स्टॉक जल गया था, वह सर्वेक्षण संख्या 9/3 (अनुलग्नक आर-8) में स्थित था। तदनुसार, यह तर्क दिया जाता है कि बीमा कंपनी के लिए यह तर्क देने का कोई आधार नहीं था कि गोदाम में जमा राशि बीमा पॉलिसी द्वारा कवर किए गए परिसर के दायरे से बाहर थी।

2 (2016) 15 एससीसी 161।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 13 एस सी आर।

25. फिअर के कारण के पहलू पर विशेष रूप से, श्री गोस्वामी का तर्क है कि वेल्डिंग मशीन और सिलेंडरों को 11.56.16 घंटों में दृश्य की सीमा से हटा दिया गया था और छत वेल्डिंग का काम

किसी भी मामले में 16.04 घंटों के बाद 14.03.2018 पर जारी नहीं रहा। इसलिए, यदि वेल्डिंग के काम से निकलने वाली चिंगारी आग लगने का कारण होती, तो यह 26 मिनट तक बिना ध्यान दिए नहीं जाती क्योंकि ज्वलनशील रसायन, कागज आदि तुरंत आग की चपेट में आ जाते। वेल्डिंग के काम के अंत और फ़ाई रे की घटना के बीच लगभग 26 मिनट के विशिष्ट अंतराल के कारण, श्री गोस्वामी के अनुसार वेल्डिंग के काम को फ़ाई रे का कारण बताना अतार्किक होगा। इस प्रक्षेपण के साथ, दावेदारों का तर्क है कि बीमित व्यक्ति की ओर से कोई लापरवाही नहीं की गई थी और बिजली के शॉर्ट-सर्किट के कारण को सही माना गया था।

26. यह आगे तर्क दिया गया कि विभिन्न सरकारी विभागों के साथ-साथ स्वतंत्र सर्वेक्षणकर्ताओं की कई रिपोर्टों ने इस निष्कर्ष का समर्थन किया कि यह मामला शॉर्ट-सर्किट के कारण हुआ था। इसके अलावा, यह भी बताया गया कि जीआई शीट रूफ एनजी के काम के दौरान कोई वेल्डिंग नहीं हुई क्योंकि वे वेल्डिंग के दौरान पिघल जाते हैं। इसके बजाय, जी. आई. छत के काम में नट और बोल्ट का उपयोग किया जाता था।

27. बीमा पॉलिसी की शर्तों के उल्लंघन के पहलू पर, यह तर्क दिया गया था कि गोदाम की छत से पानी के रिसाव की समस्या को दूर करने के लिए छत की मरम्मत का काम किया जा रहा था। इस प्रकार, बीमित परिसर में कोई बदलाव नहीं किया गया था जिससे जोखिम बढ़ जाता। इसलिए बीमाकृत ने कभी भी सामान्य शर्त का उल्लंघन नहीं किया।

28. सीमा शुल्क में छूट के मुद्दे पर, यह तर्क दिया जाता है कि सीमा शुल्क अधिनियम 1962 की धारा 22 और 23 का लाभ केवल आयातकों के लिए उपलब्ध था, न कि उन लोगों के लिए जो अपने ग्राहकों के लिए ऐसे सामान को विश्वास में रखते हैं। इसके अलावा, दावेदार से प्राप्त वचन पत्र जिसमें कहा गया था कि वे देय सीमा शुल्क (अनुलग्नक आर-4) पर छूट या कमी का दावा नहीं करेंगे, को भी रिकॉर्ड में रखा गया था। तदनुसार यह प्रस्तुत किया जाता है कि उपलब्ध शुल्क की छूट और कटौती से दावेदारों को लाभ नहीं होता है और उक्त राशि (रु। 2,13,00,061/-) का भुगतान सीधे सीमा शुल्क विभाग को किया जा सकता है। 29. दावेदारों के विद्वान वकील ने केनरा बैंक बनाम यूनाइटेड इंडिया इश्योरेंस कंपनी 3 पर भरोसा करते हुए तर्क दिया कि बीमा कंपनी

3 (2020) 3 एससीसी 455।

1037

न्यू इंडिया आश्वासन कंपनी। लिमिटेड. और ओ. आर. एस. बनाम. मेसर्स मुदित रोडवेज [हृषिकेश रॉय, जे.] 1038

अपने दायित्व से बच नहीं सकता है यदि यह साबित करने के लिए कुछ भी नहीं है कि बीमाकृत स्वयं बीमाकृत के कारण हुआ था, चाहे बीमाकृत का कारण कुछ भी हो। रिलायंस

खतेमा फाइबर लिमिटेड बनाम पर भी रखा गया था। न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

& एन. आर. 4 यह तर्क देने के लिए कि सर्वेक्षणकर्ता की रिपोर्ट पवित्र नहीं थी और इसलिए, यदि आवश्यक हो तो इससे अलग किया जा सकता है।

चर्चा और निष्कर्ष

30. हमने दोनों पक्षों की दलीलों की समीक्षा की है और विभिन्न एजेंसियों, नागरिक अधिकारियों, बीमा कंपनी और सर्वेक्षणकर्ताओं की कई रिपोर्टों की सावधानीपूर्वक जांच की है।

प्रतिनियुक्ति पत्र के अलावा सामग्री

31. अस्वीकृति पत्र का प्रासंगिक हिस्सा नीचे दिया गया है:

“..... बीमित परिसर कथित शुल्क के कारण प्रभावित नहीं हुआ है। उपर्युक्त परिसर जहां कथित रूप से नुकसान हुआ है, पॉलिसी के तहत बीमाकृत नहीं है। इस प्रकार कथित नुकसान वाले कुत्ते (एस. आई. सी.) नीति के दायरे में नहीं आते हैं।

इस घटना का मूल कारण प्रबंधन की ओर से पर्याप्त सावधानी न बरतने में लापरवाही थी जब निर्माण कार्य चल रहा था, वह भी एक सुरक्षित सीमा शुल्क बंधुआ गोदाम में जहां कई खतरनाक रसायन संग्रहीत किए गए थे: एफ. आई. आर. ई. का कथित कारण गर्म है (एस. आई. सी.) नीति के तहत कवर किया गया है.... ”

बीमा कंपनी ने अपने पत्र में दावे को अस्वीकार करने के लिए दो विशिष्ट आधारों का उल्लेख किया है: (i) यह कि बीमा का स्थान उस परिसर का हिस्सा था जो बीमा पॉलिसी के अंतर्गत नहीं आता था, और (ii) कि गोदाम की छत की मरम्मत करने में बीमित व्यक्ति की ओर से लापरवाही की गई थी, जिसके कारण बीमा किया गया था।

32. विशेष रूप से, पहले के मामलों में जैसे कि गलाडा पावर एंड टेलीकम्युनिकेशन लिमिटेड बनाम. यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड और ए. एन. आर. 5 और सौराष्ट्र केमिकल्स लिमिटेड बनाम. राष्ट्रीय बीमा कंपनी लिमिटेड 6, यह घोषित किया गया था कि नए आधार

4 2021 एससीसी ऑनलाइन एससी 818। 5 (2016) 14 एससीसी 161। 6 (2019) 19 एससीसी 70

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 13 एस सी आर।

यदि उन्हें अस्वीकृति पत्र में शामिल नहीं किया गया है तो सुनवाई के दौरान अस्वीकृति पेश नहीं की जा सकती है। इस कानूनी सिद्धांत को जेएसके में दोहराया गया था।

इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड बनाम ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड 7: “**10.** अपीलार्थियों के विद्वान वरिष्ठ वकील श्री गोपाल शंकरनारायण ने उपरोक्त आदेशों पर हमला करने के लिए मूल और प्रक्रियात्मक दोनों बिंदुओं पर तर्क दिया है। उनका पहला निवेदन यह है कि बीमा कंपनी दावे को अस्वीकार करते समय उनके द्वारा उद्धृत आधारों से परे दावे की याचिका का विरोध नहीं कर सकती है। इस तर्क के समर्थन में, मामले में इस न्यायालय का निर्णय सौराष्ट्र केमिकल्स लिमिटेड

बनाम.राष्ट्रीय बीमा कंपनी लिमिटेड [(2019) 19 एस. सी. सी. 70] का उल्लेख किया गया है। इस फैसले में कहा गया है:—

“23. इसलिए, हमारी यह सुविचारित राय है कि गलादा [गलादा पावर एंड टेलीकम्युनिकेशन लिमिटेड v.यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड (2016) 14 एस. सी. सी. 161: (2017) 2 एस. सी. सी. (सी. आई. वी.) 765] अंक (2) पर, अभी भी अंतिम अधिकार रखता है। यह एक तय स्थिति है कि एक बीमा कंपनी अस्वीकृति पत्र में उल्लिखित आधारों से परे यात्रा नहीं कर सकती है। यदि बीमाकर्ता ने अस्वीकृति पत्र में एक विशिष्ट आधार के रूप में सूचना में देरी नहीं ली है, तो वे एन. सी. डी. आर. सी. के समक्ष उपभोक्ता शिकायत की सुनवाई के चरण में ऐसा नहीं कर सकते हैं।

33. सुनवाई के दौरान पूरक तर्कों का प्रचार करना, (बीमाकर्ता के अस्वीकृति पत्र से परे), स्पष्ट रूप से निषिद्ध है। नतीजतन, यह माना जाता है कि बीमाकर्ता अस्वीकृति को सही ठहराने के लिए अपने पत्र में विस्तृत से परे अतिरिक्त तर्क पेश नहीं कर सकता है।

यदि नीति के तहत आग लगी हो तो उसका स्थान

34. आइए अब हम विश्लेषण करें कि क्या जली हुई जगह बीमा पॉलिसी के तहत कवर की गई थी। मैसर्स प्लेटिनम लॉजिस्टिक्स द्वारा संचालित परिसर के भीतर काम करने वाले सभी तीन गोदामों की पहचान उसी सर्वेक्षण संख्या यानी 9/3 के साथ छुट्टी और लाइसेंस समझौते द्वारा की गई है। वास्तव में, नीति दस्तावेजों के साथ-साथ सीमा शुल्क अधिनियम 1962 की धारा 57 के तहत जारी लाइसेंस सर्वेक्षण संख्या 9/3, गाँव-वेश्वी, गवन फाटा, चिरनेर रोड, सामने स्थित गोदाम को संदर्भित करता है। बल सी. एफ. एस., तालुका-उरण, रायगढ़। पॉलिसी दस्तावेज़ में बीमित व्यक्ति का पता 'मुदित रोडवेज' के रूप में निर्दिष्ट किया गया था।

7 2022 एस. सी. सी. ऑनलाइन 1451 1039

न्यू इंडिया आश्वासन कंपनी। लिमिटेड. और ओ. आर. एस. बनाम. मैसर्स मुदित रोडवेज [हृषिकेश रॉय, जे.] 1040

सर्वेक्षण सं. 9/3, सामने। फोर्ब्स सी. एस. एफ., चिरनेर रोड, गाँव-वेश्वी, उरण, एम. एच. 1369, एम. एच.-4000702। इसके अलावा, विवादित आदेश सही ढंग से इंगित करता है कि गोदाम को सीमा शुल्क अधिकारियों द्वारा भौतिक रूप से सत्यापित किया गया था, जिसके बाद उसी पते पर बीमित व्यक्ति को टेलीफोन और बिजली कनेक्शन प्रदान किए गए थे। दावेदारों को संबोधित सभी संचार, बीमा कंपनी से अस्वीकृति पत्र सहित, दिए गए पते पर स्थित परिसर का बीमा कराने की बात स्वीकार करते हैं।

35. इसलिए, पॉलिसी दस्तावेजों, छुट्टी और लाइसेंस समझौते और सीमा शुल्क, पुलिस, वित्तीय और बिजली विभागों से प्राप्त विभिन्न संचारों को देखते हुए, यह निष्कर्ष निकालना उचित है कि बीमित परिसर वही था जिसकी पहचान बीमा कंपनी द्वारा सर्वेक्षण संख्या 9/3 में की गई थी और

बीमा किया गया था। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए कुछ भी नहीं है कि जिस क्षेत्र में 14.03.2018 पर मामला दर्ज किया गया था, वह उक्त बीमा पॉलिसी के दायरे में नहीं आया था।

बीमित भविष्यवाणियों और जोखिम वृद्धि के लिए परिवर्तन

36. इस पहलू पर विचार करने के लिए, बीमा पॉलिसी में खंड 3 प्रासंगिक है जो नीचे दिया गया है:

“3. निम्नलिखित परिस्थितियों में से किसी के तहत बीमा तब तक कुर्क करना बंद कर देता है जब तक कि बीमित व्यक्ति, किसी भी नुकसान या क्षति की घटना से पहले, कंपनी द्वारा या उसकी ओर से पॉलिसी पर अनुमोदन द्वारा कंपनी की मंजूरी प्राप्त नहीं करता है:-

(क) यदि किए जा रहे व्यापार या निर्माण में परिवर्तन किया जाता है, या यदि बीमित या बीमित संपत्ति वाले भवन के कब्जे की प्रकृति या अन्य परिस्थितियों को इस तरह से बदला जाता है कि बीमित जोखिमों से नुकसान या क्षति का खतरा बढ़ जाए।

(ख) यदि बीमित या बीमित संपत्ति वाली इमारत खाली हो जाती है और इसलिए 30 दिनों से अधिक की अवधि के लिए बनी रहती है।

(ग) यदि संपत्ति में ब्याज वसीयत या कानून के संचालन के अलावा बीमित व्यक्ति से गुजरता है।”

37. खंड 3 (ए) इंगित करता है कि बीमा पॉलिसी लागू नहीं होगी या कुछ मामलों में बीमित परिसर को कवर करेगी जहां

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 13 एस सी आर।

बीमित परिसर या उसके भीतर के सामान के नुकसान या क्षति का खतरा बढ़ जाता है। इस मामले में, बीमित व्यक्ति ने गोदाम में पानी के रिसाव को रोकने के लिए छत की मरम्मत की थी। छत पर इस तरह के आवश्यक मरम्मत कार्य को उचित रूप से एक परिवर्तन के रूप में नहीं माना जा सकता है जो नुकसान या क्षति के जोखिम को बढ़ाएगा, जैसा कि बीमा कंपनी द्वारा आग्रह किया गया है। हमारे आकलन में, उक्त मरम्मत कार्य एक परिवर्तन की श्रेणी में नहीं आएगा जो गोदाम परिसर के लिए बीमित जोखिम को बढ़ाएगा। इसलिए, इस पर एन. सी. डी. आर. सी. द्वारा लिए गए दृष्टिकोण के साथ कोई असंवेदनशीलता नहीं देखी जाती है।

आग लगने और खतरे का कारण-कई रिपोर्टें

38. 14.03.2018 घटना से निपटने के दौरान, कई एजेंसियों, अधिकारियों और संगठनों ने गोदाम दुर्घटना की सूचना दी है। इनका सारांश इस प्रकार है:

एस. नहीं।	रिपोर्ट	तिथि	अंतरण	द्वारा प्रस्तावित
1	विद्युत निरीक्षक	23.04.2018	गो-डाउन के कोने में इलेक्ट्रिकल सेटअप के शॉर्ट सर्किट से बनी चिंगारी।	उपयुक्त सरकार द्वारा विद्युत अधिनियम, 2003 की धारा 161 (2) (ए) के तहत।
2	आसिस्टेंट। प्रबंधक, जवाहरलाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट	09.05.2018	घटना का संभावित कारण इलेक्ट्रिकल शॉर्ट सर्किट बताया गया है।	दावेदार
3	स्वतंत्र एस.-मेसर्स एच. कन्नन	07.08.2018	एस. पी. ए. आर. के. एस. एफ. आर. ओ. एम. इलेक्ट्रिकल शॉर्ट सी. आई. आर. सी. यू. आई. जी. एन. आई. टी. ई. डी. आई. एन. एफ. एल. ए. एम. ए. बी. एल. ई. रसायन संग्रहीत।	बजाज एलियांज जनरल इश्योरेंस कंपनी-मैसर्स ग्लोबल एक्जिम (मैसर्स मुदित रोडवे के ग्राहक) के बीमाकर्ता
4	स्वतंत्र एस.-मेसर्स प्रोक्लेम	31.08.2018	पुलिस रिपोर्ट और एफ. आई. आर. ब्रिगेड के आधार पर घटना के संभावित कारण का निर्धारण शॉर्ट सर्किट के रूप में किया जाता है।	टाटा ए आई जी जी एन। बीमा कंपनी-विस्तारित पॉलिमर प्रणाली के लिए बीमाकर्ता (मेसर्स मुदित रोडवे के ग्राहक)

1041

न्यू इंडिया आश्वासन कंपनी। लिमिटेड. और ओ. आर. एस. बनाम.मेसर्स मुदित रोडवेज [हृषिकेश रॉय, जे.] 1042

5	पुलिस जाँच (संलग्न नहीं)	03.11.2018	एल इक्ट्रि कैल शोर टी सर्किट फाइ रे का कारण हो सकता है।	
6	कार्यकारी मजिस्ट्रेट का आदेश	03.11.2018	आई. ओ. ने निष्कर्ष निकाला कि आकस्मिक आग शॉर्ट सर्किट	बॉम्बे पुलिस नियमावली, 1959 की धारा 21 सीआरपीसी,

			के कारण लगी थी	नियम 105।
7	एम/एस. जे. बशर एंड एसोसिएट्स	11.04.2019	शॉर्ट सर्किट के रूप में एफ. आई. आर. के कारण का निष्कर्ष निकालने के लिए पुलिस रिपोर्ट (3.11.18) पर निर्भर। यह देखा गया कि आग से प्रभावित गोदाम सर्वेक्षण एन. ओ. एस. बीमा पॉलिसी के अनुसार जोखिम वाले स्थान नहीं हैं।	बीमा कंपनी।
8	मेसर्स स्क्रीन फैक्ट्स सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड फॉरेंसिक जाँच रिपोर्ट	10.12.2018	चल रहे वेल्डिंग कार्य से चिंगारी ने एफएल एम्मेबल केमिकल्स बी/डब्ल्यू ए एंड डी को प्रज्वलित कर दिया क्योंकि घटना के क्षेत्र के पास कोई विद्युत तार उपकरण नहीं था।	बीमा कंपनी।
9	मेसर्स जे. सी. भंसाली एंड को इन्वेस्टिगेशन रिपोर्ट	15.04.2019	निर्माण कार्य के दौरान पर्याप्त सावधानी न बरतने के कारण स्पाक्स गिरने लगे। (मेसर्स स्क्रीन और जे बशीर पर आधारित)।	बीमा कंपनी।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 13 एस सी आर।

38.1 रिपोर्टों के उपरोक्त सारणीबद्ध सारांश से कई और मिश्रित तथ्यों का पता चलता है। सात रिपोर्टों से पता चलता है कि शॉर्ट-सर्किट इस घटना का कारण है। इलेक्ट्रिकल इंस्पेक्टर की 23.04.2018 रिपोर्ट ने इस बात पर प्रकाश डाला कि 4 के आसपास एक शॉर्ट-सर्किट: 30 14.03.2018 पर शाम को मेसर्स मुदित रोडवेज के गोदाम में चिंगारी फैल गई। नतीजतन, गिरने वाली बिजली की चिंगारी ने डिब्बों, कागजों और रसायनों को प्रज्वलित कर दिया। जवाहरलाल नेहरू ट्रस्ट के सहायक प्रबंधक ने यह भी कहा कि बिजली के शॉर्ट-सर्किट से बिजली चली गई, जैसा कि साइट पर फाई री-फाई घाट टीमों द्वारा देखा गया था।

38.2 इसी तरह, एम/एस. जे. बशीर एंड एसोसिएट्स की 11.04.2019 रिपोर्ट बताती है कि जाँच का सही कारण अनिर्णायक है लेकिन एक शॉर्ट-सर्किट घटना के लिए चिंगारी हो सकती है। नवी मुंबई पोर्ट डिवीजन में विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट-सह-सहायक पुलिस आयुक्त ने पुलिस जांच रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया और (03.11.2018 पर) निष्कर्ष निकाला कि दुर्घटना शॉर्ट-सर्किट के कारण हुई थी।

38.3 आई. डी. 1 की फोरेंसिक जांच रिपोर्ट में विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया, जिसमें बीमित परिसर में लगे 17 कैमरों के मलबे का रासायनिक विश्लेषण और सी. सी. टी. वी. फुटेज शामिल हैं। इसने निर्धारित किया कि एक शॉर्ट-सर्किट कारण नहीं था, बल्कि छत पर वेल्डिंग के काम से चिंगारी हो सकती है। मेसर्स भंशाली एंड कंपनी की दिनांकित 15.04.2019 की सर्वेक्षणकर्ता की रिपोर्ट भी इस तरह के निष्कर्ष से मेल खाती है। जांचकर्ताओं ने पाया कि उस दिन पर्याप्त वेल्डिंग का काम किया गया था और गोदाम में संग्रहीत एफएल एम्मेबल रसायनों को प्रज्वलित करने वाली चिंगारी की ओर इशारा किया गया था। उनके अनुसार, कई खतरनाक रसायनों के साथ एक गोदाम में निर्माण कार्य के दौरान बीमित व्यक्ति की लापरवाही, दुर्घटना का मूल कारण था। 38.4 हालांकि कैमरा नंबर 3 का फुटेज और कैमरा नंबर 9 का वीडियो उपलब्ध नहीं था, फोरेंसिक टीम ने उपलब्ध सीसीटीवी फुटेज का विश्लेषण किया। उन्होंने देखा कि सिलेंडर के साथ वेल्डिंग उपकरण 11 बजे छत पर लाए जा रहे थे: 51:17 11 बजे से वेल्डिंग का काम किया जा रहा है: 51:17 11 बजे तक: 56:16 घंटे, जिसके बाद उपकरणों को आसपास से हटा दिया गया। 12 बजे: 10:17 घंटे। एक कर्मचारी को वेल्डिंग लाल डिब्बों को हटाते हुए देखा गया। यह उल्लेखनीय है क्योंकि यह इंगित करता है कि वेल्डिंग उपकरण श्रमिकों द्वारा फिर से होने से लगभग चार घंटे पहले ले लिए गए थे। इसके बाद, श्रमिकों को छत एनजी कार्य स्थल पर जी. आई. छत एनजी शीट्स को हेड लोड के रूप में ले जाते हुए देखा गया, जो 16 तक जारी रहा: 04 घंटे। सीसीटीवी फुटेज में श्रमिकों को जीआई 1043 को स्थानांतरित करने के लिए क्रेन का उपयोग करते हुए भी दिखाया गया है।

न्यू इंडिया आश्वासन कंपनी। लिमिटेड. और ओ. आर. एस. बनाम. मेसर्स मुदित रोडवेज [हृषिकेश रॉय, जे.] 1044

वेल्डिंग के बाद छत की मरम्मत क्षेत्र के लिए रूफी एनजी शीट्स और एमएस रूफी एनजी ट्रेस। 4 घंटे, 19 मिनट और 43 सेकंड के पर्याप्त समय अंतराल ने वेल्डिंग के काम के अंत को फाई रे से अलग कर दिया। भले ही छत की मरम्मत 16 तक जारी रही: 04 घंटे।, फिर से शुरू होने से पहले 26 मिनट का एक महत्वपूर्ण समय अंतराल मौजूद था। 38.5 फोरेंसिक इन्वेस्टिगेटर का निष्कर्ष कि छत पर वेल्डिंग से चिंगारी के कारण यह तर्कहीन प्रतीत होता है, क्योंकि उन्होंने शॉर्ट-सर्किट जैसे अन्य संभावित कारणों की अनदेखी की। निर्णय के समय के निकट वेल्डिंग से संबंधित कार्यों में श्रमिकों के शामिल नहीं होने के बावजूद लापरवाही को गलत तरीके से बीमित व्यक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था। इसके अलावा, इस बात के सबूत उपलब्ध नहीं थे कि श्रमिकों द्वारा की गई गतिविधियों के कारण एफ. एल. एम्मेबल रसायनों पर चिंगारी गिरी। 39. नौ रिपोर्टों में से, सात संभावित कारण के

रूप में शॉर्ट-सर्किट का सुझाव देते हैं, जबकि दो गोदाम निर्माण के दौरान अपर्याप्त सावधानियों के लिए बीमित व्यक्ति की ओर से लापरवाही का अनुमान लगाते हैं।

40. तार्किक रूप से अगर यह वेल्डिंग की चिंगारी थी जिसके कारण आग लगी, तो यह 11 के तुरंत बाद होना चाहिए था:54:27 वेल्डिंग कार्यों के दौरान या लगभग 16:04 छत की मरम्मत के दौरान घंटे।4 घंटे 19 मिनट 43 सेकंड का समय अंतराल आश्चर्यजनक रूप से महत्वपूर्ण है।रुफी एन. जी. का काम समाप्त होने के बाद 26 मिनट का समय अंतराल है और इसकी कोई तर्कसंगत व्याख्या नहीं है।16 पर छत के काम के दौरान वेल्डिंग का कोई सबूत नहीं है:04 या अंतिम समय के करीब, जो अनिर्णायक फोरेंसिक रिपोर्ट की व्याख्या करता है जिसमें कहा गया है कि चिंगारी 16 पर अंतिम घटना का कारण बन सकती थी:30.

41. जैसा कि उल्लेख किया गया है, यह खंडन दो रिपोर्टों (i) स्क्रीन फैक्ट्स सर्विस प्राइवेट लिमिटेड की फोरेंसिक रिपोर्ट और (ii) मेसर्स भंसाली एंड कंपनी की रिपोर्ट पर आधारित है। पहला विशेष रूप से अनिर्णायक था।अन्य रिपोर्टों से पता चलता है कि शॉर्ट-सर्किट संभावित कारण है, लापरवाही नहीं।16 पर वेल्डिंग कार्य और फ़ायर के बीच मौजूद महत्वपूर्ण समय अंतराल:30 कोई तार्किक व्याख्या नहीं है।तदनुसार अस्वीकृति का आधार अनुचित प्रतीत होता है और स्वीकार्य नहीं है।

पर्यवेक्षक की रिपोर्ट का मूल्य

42. बीमा अधिनियम 1938 के अनुसार, दावे के लिए एक अनुमोदित सर्वेक्षणकर्ता का मूल्यांकन आवश्यक है।हालाँकि दावेदार का तर्क है कि सर्वेक्षणकर्ता की रिपोर्ट नकारात्मक नहीं है।मुख्य सवाल यह है कि रिपोर्ट किस हद तक बाध्यकारी है और किन शर्तों के तहत इसे ओवरराइड किया जा सकता है।को।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 13 एस सी आर।

इसे संबोधित करते हुए, बीमा अधिनियम, 1938 की धारा 64 (यू. एम.) (4) को उपयोगी रूप से पढ़ा जा सकता है जो सर्वेक्षणकर्ताओं और हानि मूल्यांकनकर्ताओं से संबंधित है:

64-उम. (4) बीमा (संशोधन) अधिनियम, 1968 के प्रारंभ से एक वर्ष की अवधि समाप्त होने के बाद किसी भी समय किसी बीमाकर्ता को उत्पन्न या सूचित किए गए किसी बीमाकर्ता को उत्पन्न होने वाले या बीमाकर्ता को सूचित किए गए किसी भी बीमा पॉलिसी पर मूल्य में बीस हजार रुपये के बराबर या उससे अधिक के मूल्य के भारत में भुगतान या निपटान की आवश्यकता वाले नुकसान के संबंध में कोई दावा, जब तक कि प्राधिकरण द्वारा अन्यथा निर्देश नहीं दिया जाता है, बीमाकर्ता द्वारा भुगतान के लिए स्वीकार नहीं किया जाएगा या निपटाया जाएगा, जब तक कि उसने इस धारा के तहत जारी किए गए नुकसान पर एक रिपोर्ट प्राप्त नहीं की है, जो एक सर्वेक्षणकर्ता या हानि मूल्यांकनकर्ता के रूप में कार्य करने के लिए इस धारा के

तहत जारी लाइसेंस रखता है (इसके बाद "अनुमोदित सर्वेक्षणकर्ता या हानि मूल्यांकनकर्ता" के रूप में संदर्भित):

बशर्ते कि इस उप-धारा की कोई भी बात बीमाकर्ता के किसी भी दावे को किसी भी राशि पर भुगतान करने या निपटाने के अधिकार को छीनने या कम करने के लिए नहीं मानी जाएगी, जो अनुमोदित सर्वेक्षणकर्ता या हानि मूल्यांकनकर्ताओं द्वारा निर्धारित राशि से भिन्न है।”

43. उपरोक्त प्रावधान अनिवार्य करता है कि रुपये से अधिक का दावा किया जाए। 20, 000 का मूल्यांकन शुरू में एक अनुमोदित सर्वेक्षणकर्ता द्वारा किया जाना चाहिए। यह उल्लेखनीय है कि बीमाकर्ता के पास सर्वेक्षणकर्ता द्वारा मूल्यांकन की गई राशि की तुलना में अलग-अलग राशि के लिए दावे का निपटान करने का विवेकाधिकार है।

44. न्यू इंडिया एस्योरेंस कंपनी लिमिटेड बनाम प्रदीप कुमार (ऊपर),

अदालत ने संबोधित किया कि क्या किसी को सर्वेक्षणकर्ताओं के मूल्यांकन के आधार पर भुगतान स्वीकार करना होगा या प्रतिस्थापन और मरम्मत के लिए उच्च लागत का समर्थन करने के लिए स्वतंत्र साक्ष्य प्रदान कर सकता है। न्यायालय का प्रासंगिक निष्कर्ष इस प्रकार है:

“22. दूसरे शब्दों में, हालांकि बीमाकर्ता द्वारा बीस हजार रुपये या उससे अधिक के दावे के भुगतान या निपटान के लिए अनुमोदित सर्वेक्षणकर्ता द्वारा नुकसान का आकलन एक पूर्व शर्त है, फिर भी सर्वेक्षणकर्ता की रिपोर्ट अंतिम और अंतिम शब्द नहीं है। यह इतना पवित्र नहीं है कि इसे अलग नहीं किया जा सकता है; यह निर्णायक नहीं है। बीमित व्यक्ति द्वारा किए गए नुकसान के संबंध में बीमाकर्ता द्वारा दावे के निपटारे के लिए अनुमोदित सर्वेक्षणकर्ता की रिपोर्ट आधार या आधार हो सकती है, लेकिन ऐसी रिपोर्ट न तो बीमाकर्ता पर बाध्यकारी है और न ही बीमित व्यक्ति पर।”

45. उपरोक्त अनुपात द्वारा निर्देशित, वर्तमान मामले में स्थिति समान पाई गई है। सर्वेक्षक की रिपोर्ट को पवित्र **1045** नहीं माना जा सकता है।

न्यू इंडिया आश्वासन कंपनी। लिमिटेड. और ओ. आर. एस. बनाम. मेसर्स मुदित रोडवेज [हृषिकेश रॉय, जे.] 1046

दस्तावेज़ और एक जांच रिपोर्ट सहित विपरीत साक्ष्य, खंडन के अधीन है। मुख्य सवाल यह है कि क्या जांच रिपोर्ट अपरिहार्य है, या क्या अकेले सर्वेक्षण रिपोर्ट पर्याप्त है, ताकि जांच के कारण का निर्धारण किया जा सके।

46. फोरेंसिक परीक्षक का विश्लेषण तैयार संदर्भ के लिए नीचे प्रस्तुत किया गया है:-

“ 19.01. बीमाकृत ने एफ. आई. आर. के कारण हुए नुकसान का दावा किया है। शॉर्ट सर्किट के कारण होने का दावा किया गया है।

19.02. मेसर्स स्क्रीनफैक्ट्स सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड द्वारा इस मामले की जांच की गई थी।

19.03.मेसर्स स्क्रीनफैक्ट्स सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड ने निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला है:-

19.04.उस दिन गोदाम के ई और एफ खंडों के बीच के अंतराल में छत के निर्माण को ध्यान में रखते हुए जिसमें काफी वेल्डिंग काम करना शामिल था, यह माना जाता है कि छत पर वेल्डिंग के दौरान ए एंड डी के बीच संग्रहीत आस-पास के एफ. एल. एम्मेबल रसायनों पर चिंगारी गिर सकती थी।

19.05.इस घटना का मूल कारण निर्माण कार्य के दौरान पर्याप्त सावधानी न बरतने में प्रबंधन की ओर से लापरवाही थी, वह भी एक सुरक्षित सीमा शुल्क बंधुआ गोदाम में जहां कई खतरनाक रसायन देखे गए थे।”

47. सर्वेक्षणकर्ता की उपर्युक्त रिपोर्ट, हालांकि अन्यथा व्यापक है, लेकिन इसके वास्तविक कारण की पहचान करने के पहलू पर अनिर्णायक है। यह देखते हुए कि सर्वेक्षणकर्ता की रिपोर्ट केवल फॉरेंसिक परीक्षक, यानी मेसर्स स्क्रीन फैक्ट्स सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड के निर्णय पर निर्भर करती है, उक्त रिपोर्ट पर भरोसा करना इस अदालत की राय में असुरक्षित होगा।

दायित्व का विस्तार जब आग का कारण अनिश्चित होता है

48. एफ. आई. आर. के विभिन्न कारणों का सुझाव देने वाली कई सर्वेक्षण रिपोर्ट बीमा दावे पर एक उलझन भरी पहली प्रस्तुत करती हैं। बीमाकर्ता द्वारा प्रदान की गई रिपोर्ट, हालांकि इरादे से प्रस्तुत की गई थी, लेकिन अनिर्णायक और विरोधाभासी भी पाई गई। दावेदार द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट, जिसमें सरकारी विभागों और दो स्वतंत्र सर्वेक्षणकर्ताओं द्वारा मूल्यांकन शामिल हैं,

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 13 एस सी आर।

हालांकि उन्होंने लगातार फ़ायर के कारण को शॉर्ट-सर्किट के रूप में पहचाना है। हालांकि बीमा कंपनी द्वारा भरोसा की गई रिपोर्टों के अनुसार जाना मुश्किल है, लेकिन दावेदारों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट सुसंगत और तार्किक होने के कारण वास्तविक कारण का पता लगाने में अधिक स्वीकार्य हैं।

49. उपरोक्त पहलू पर, एन. सी. डी. आर. सी. ने उचित रूप से भरोसा रखा है

केनरा बैंक बनाम यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड 8, जिसमें न्यायालय ने निर्णय दिया पर्याप्त वैज्ञानिक विश्लेषण की कमी के कारण मेसर्स टूथ लैब्स द्वारा संचालित सर्वेक्षणकर्ता की रिपोर्ट पर भरोसा न करना और यह अभिनिर्धारित करना कि:

“किसी भी स्थिति में, न तो मेसर्स टूथ लैब्स की रिपोर्ट में और न ही बीमा कंपनी की अन्य रिपोर्टों में यह दिखाने के लिए कुछ है कि बीमित व्यक्ति ने कोल्ड स्टोर को चालू कर दिया था। चाहे एफ. आई. आर. शॉर्ट सर्किट या किसी अन्य कारण से हुआ हो, जब तक कि बीमित व्यक्ति वह व्यक्ति नहीं है जिसने एफ. आई. आर. का कारण बना, बीमा कंपनी बीमा पॉलिसी के संदर्भ

में अपने दायित्व से बच नहीं सकती है। हम बीमा कंपनी के इस तर्क को खारिज करते हैं कि मिट्टी के तेल के उपयोग से आग लगी थी और इसलिए यह उत्तरदायी नहीं है।”

50. इसलिए, यह स्पष्ट रूप से घोषित किया गया था कि जांच का सटीक कारण, चाहे वह शॉर्ट-सर्किट या किसी वैकल्पिक कारक के लिए जिम्मेदार हो, कोई मायने नहीं रखता है, बशर्ते कि दावेदार जांच के लिए उकसाने वाला न हो। यह मामला इस मौलिक सिद्धांत को रेखांकित करता है कि बीमित व्यक्ति के प्रति बीमा कंपनी का दायित्व बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। एन. सी. डी. आर. सी. का इस बाध्यकारी मिसाल का विवेकपूर्ण अनुप्रयोग अच्छी तरह से योग्य प्रतीत होता है।

ग्राहकों के कर्तव्य और चोट से बचने की योग्यता

51. अनुचित संवर्धन से संबंधित तर्क को बेहतर ढंग से समझने और समझने के लिए, दावा कथन (11.02.2019) पर विचार करने की आवश्यकता है। जैसा कि देखा जा सकता है, दावेदार ने रुपये काट लिए। कवर किए गए नुकसान के लिए 2,39,00,664.20 और रु। जले हुए माल को बचाने के लिए 19,75,388। विशेष रूप से, पॉलिसी के तहत शुल्क राशि रुपये के रूप में निर्धारित की गई थी। 2,13,00,061.01। सीमा शुल्क अधिकारियों ने इस सटीक राशि को बरामद करने के अपने इरादे के बारे में बताया। 2,13,00,061, बीमित व्यक्ति से दिनांकित 06.02.2019 और 26.10.2020 पत्रों के माध्यम से। इन संचारों के जवाब में, बीमित व्यक्ति ने 11.08.2015 (अनुलग्नक R-4) पर एक वचन पत्र प्रस्तुत किया, जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया कि वे

8 (2020) 3 एससीसी 455।

1047

न्यू इंडिया आश्वासन कंपनी। लिमिटेड. और ओ. आर. एस. बनाम. मेसर्स मुदित रोडवेज [हृषिकेश रॉय, जे.] 1048

सीमा शुल्क अधिनियम 1962 की धारा 22 और 23 के तहत सीमा शुल्क से संबंधित किसी भी छूट की मांग नहीं करेगा। यह कार्रवाई सीमा शुल्क के कारण दावेदारों के लिए अन्यायपूर्ण संवर्धन को खारिज करती है।

52. इसके अतिरिक्त, सार्वजनिक गोदाम अनुज्ञप्ति विनियम, 2016

यह अनिवार्य है कि सार्वजनिक गोदाम लाइसेंसधारियों को संग्रहीत वस्तुओं से संबंधित सभी शुल्क, ब्याज, शुल्क और दंड का भुगतान करने के लिए सहमत होना चाहिए। यही कारण था कि बीमित व्यक्ति द्वारा सीमा शुल्क पैकेज पॉलिसी भी बीमा कंपनी से प्राप्त की गई थी, ताकि गोदाम में नष्ट या क्षतिग्रस्त माल के लिए खुद को क्षतिपूर्ति दी जा सके। कहने की जरूरत नहीं है कि उक्त विनियम बीमित व्यक्ति को ऐसे सभी आवश्यक कर्तव्यों, शुल्क या दंड का भुगतान करने के लिए कर्तव्यबद्ध बनाते हैं। यह उस संदर्भ में है कि बीमित व्यक्ति ने स्पष्ट रूप से कहा था कि बीमा कंपनी बीमित व्यक्ति को शुल्क के उक्त घटक को भेजने के बजाय सीधे अधिकारियों को भेज सकती है। यह बीमित व्यक्ति के प्रति किसी भी अन्यायपूर्ण संवर्धन को दरकिनार कर देगा।

53. यहाँ मुख्य सवाल यह है कि क्या बीमा दावे में सीमा शुल्क राशि शामिल होनी चाहिए। 2,13,00,061.01-जैसा कि प्रतिवादी द्वारा दावा किया गया है। बीमा कंपनी ने तर्क दिया कि सीमा शुल्क को शामिल नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 में निर्दिष्ट किया गया है कि केवल माल का आयातक ही सीमा शुल्क का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी है जब वे प्रवेश पत्र जमा करते हैं।

54. बीमाकर्ता ने सीमा शुल्क अधिनियम की धारा 15 (1) (बी) पर अपना रुख रखते हुए कहा कि भंडारित वस्तुओं के लिए शुल्क दरें तब निर्धारित की जाती हैं जब घर के उपभोग के लिए प्रवेश का बिल दर्ज किया जाता है, और शुल्क मूल्यांकन (धारा 17) केवल तब होता है जब प्रवेश का बिल (धारा 46) प्रस्तुत किया जाता है। इस मामले में, प्रवेश के किसी भी बिल का भुगतान नहीं किया गया था, और किसी भी मूल्यांकन माल का भुगतान नहीं किया गया था। बीमाकर्ता के अनुसार, चूंकि कर योग्य घटना कभी नहीं हुई, इसलिए कोई सीमा शुल्क देयता नहीं है। वकील ने सीमा शुल्क अधिनियम की धारा 23 का भी हवाला दिया, जिसमें सीमा शुल्क के सहायक आयुक्त को निकासी से पहले खोए हुए या नष्ट माल के लिए शुल्क भेजने की आवश्यकता होती है।

55. हालाँकि, दावेदार के वकील ने सही तर्क दिया कि सीमा शुल्क अधिनियम की धारा 22 और 23 में निहित विशेषाधिकार, प्रोत्साहन और छूट से संबंधित, विशेष रूप से बीमित वस्तुओं के 'आयातकों' के रूप में वर्गीकृत लोगों के लिए हैं। तर्क का सार दावेदार की विशिष्ट स्थिति के इर्द-गिर्द घूमता है, क्योंकि दावेदार न तो आयातक की भूमिका निभाता है और न ही मालिक की; इसके बजाय, वे पूरी तरह से अपने ग्राहकों की ओर से माल को सौंपे गए संरक्षक के रूप में कार्य करते हैं।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 13 एस सी आर।

56. उपरोक्त चर्चा का परिणाम यह है कि गोदाम के लिए ट्रिगर के रूप में विद्युत शॉर्ट सर्किट का सुझाव देने वाली रिपोर्ट, परिचर परिस्थितियों के अनुरूप पाई जाती है। एक परिणाम के रूप में, गोदाम में शुल्क बीमित व्यक्ति की किसी भी लापरवाही के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। इसके अलावा, यह भी पाया गया है कि मामला बीमित गोदाम के भीतर हुआ है और इसके विपरीत अपीलार्थी की याचिका विश्वसनीय नहीं है। इसलिए, यह अपीलार्थियों द्वारा गलत तरीके से अस्वीकार करने का मामला है। इस प्रकार प्रत्यर्थी के बीमा दावे के पक्ष में विवादित निर्णय के साथ कोई कानूनी असंवेदनशीलता नहीं देखी जाती है।

57. जोखिम और अनिश्चितता के क्षेत्र में, व्यक्ति और संगठन बीमा के गढ़ में सांत्वना चाहते हैं- विश्वास के आधार पर बनाई गई एक वाचा। विश्वास आधारशिला के रूप में कार्य करता है, जो बीमाकर्ता-बीमित संबंध का सार है। मूल सिद्धांत यह है कि बीमा उबेरी में फाई देई के सिद्धांत द्वारा नियंत्रित होता है- बीमित व्यक्ति की ओर से पूर्ण सद्भावना होनी चाहिए। बीमा अनुबंध का दिल और आत्मा उस सुरक्षा में निहित है जो यह उन लोगों को प्रदान करता है जो इसके द्वारा बीमा कराना चाहते हैं। यह समझ इस मूलभूत विश्वास को समाहित करती है कि बीमा अपने खंडों के भीतर

विश्वास की पवित्रता को बनाए रखते हुए सुरक्षा और क्षतिपूर्ति प्रदान करता है। प्रभावी रूप से, बीमाकर्ता सद्भावना से कार्य करने और अपनी प्रतिबद्धता का सम्मान करने के लिए एक वित्तीय कर्तव्य मानता है। यह जिम्मेदारी विशेष रूप से तब स्पष्ट हो जाती है जब बीमित व्यक्ति अपने कार्यों में लापरवाही नहीं करता है। बीमा अनुबंधों में न्यास की महत्वपूर्ण भूमिका के आलोक में, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि बीमाकर्ता इस तरह की वाचा के आधार पर उस पर लगाए गए कर्तव्य को पर्याप्त रूप से पूरा करता है।

58. तदनुसार, बीमा कंपनी की अपील खारिज की जानी चाहिए। लेकिन अपील को खारिज करते समय भी, किसी भी भ्रम से बचने के लिए, दावे के सीमा शुल्क घटक को, दी गई स्थिति में, सीधे सीमा शुल्क विभाग को दिया जाना चाहिए। अपीलार्थियों के खिलाफ बीमित व्यक्ति के दावे को बरकरार रखने पर अन्य सभी कानूनी परिणाम सामने आएंगे। इसे तदनुसार आदेश दिया जाता है।

59. उपरोक्त के साथ, अपील बीमित व्यक्ति के पक्ष में खारिज हो जाती है। पक्षकारों को अपना खर्च खुद वहन करना होगा।

द्वारा तैयार किए गए हेडनोटः

याचिका खारिज कर दी गई।

निधि जैन

9 बीमा कानून पर मैकगिलिब्रे-12 वीं संस्करण, जॉन बर्ड्स, स्वीट एंड मैक्सवेल (2012)।